बाबा का दरबार लगै स री,
मंगल और शनिवार।।

बालाजी की जोत जगै स,
कटते रोग पुराणे री कटते रोग पुराणे री,
एक दरखास लगै चरणां में,
पल में बाबा आणे री पल में बाबा आणे री,
पल में रोग कटै स री,
मंगल और शनिवार।।

छोटे छोटे दो लाड़ु,
खाए त पेशी आव:स खाए त पेशी आव:स,
मार मार क सोटे बाबा,
घेर जोत प ल्याव: स घेर जोत प ल्याव: स,
ओपरा नहीं डटै स री,
मंगल और शनिवार।।

दरबारां जोत जगै स,
पहरे प हनुमान खड़ै पहरे प हनुमान खड़ै,
धरया लंगोटा बालाजी का,
दिखं सं भगवान खड़ै दिखं सं भगवान खड़ै,
सोये भाग जगैं सं री,
मंगल और शनिवार।।

बाले भक्त जोत प बैठे,
सिर प हाथ मुरारी का सिर प हाथ मुरारी का,
महराणे में झंडा गडरहया,
बाबा संकटहारी का बाबा संकटहारी का,
गुहणिया राम रटै स री,
मंगल और शनिवार।।

बाबा का दरबार लगै स री,
मंगल और शनिवार।।

गायक नरेंद्र कौशिक जी।
प्रेषक राकेश कुमार जी।
खरक जाटान(रोहतक)
9992976579

Source:
https://www.bharattemples.com/baba-ka-darbar-lage-se-ri-mangal-aur-shaniwar/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples

Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw